Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur
Directorate of Distance Education
P.G. 2nd Semester Examination 2016 (Session 2015-17)
Subject:- Sanskrit
Paper – 5th
Model Paper (Full Marks – 70)

Answer any four questions:-
किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें।

मेघदूतम्

1. उत्तरमेघ के आधार पर अलका का वर्णन करें।
2. गीतिकाव्य के रूप में मेघदूत की समीक्षा करें।
3. उत्तरमेघ के आधार पर यक्षिणी की विरहदशा का वर्णन करें।
4. मेघदूतम् में कालिदास की उपमा का मूल्याङ्कन करें।
5. उत्तरमेघ के आधार पर यक्षगृह की सुषमा का वर्णन करें।
6. मेघदूत के काव्यसौन्दर्य का वर्णन करें।
7. उत्तरमेघ में कालिदास के प्रकृति चित्रण का वर्णन करें।
8. विप्रलम्भकाव्य के रूप में मेघदूत की समीक्षा करें।

कुमारसम्भवम्

9. कुमारसम्भवम् के चतुर्थ सर्ग के काव्यवैशिष्ट्य का वर्णन करें।
10. महाकाव्य के रूप में 'कुमारसम्भवम्' की कालिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन करें।
11. कुमारसम्भवम् के चतुर्थ सर्ग का सारांश लिखें।
12. कुमारसम्भवम् के चतुर्थ सर्ग के आधार पर रतिविलाप का वर्णन करें।
13. कुमारसम्भवम् के काव्यवैशिष्ट्य का वर्णन करें।
14. कुमारसम्भवम् में महाकवि कालिदास के उपमालङ्कार की विशेषता का उल्लेख करें।
15. कुमारसम्भवम् के चतुर्थ सर्ग में महाकवि की रस-योजना की समीक्षा करें।

नैषधीयचरितम्

16. "नैषधे पदलालित्यम्" इस उक्ति की
17. 'नैषधीयचरितम्' के महाकाव्यत्व का प्रतिपादन करें।
18. 'नैषधीयचरितम्' के आधार पर हंस-विलाप का वर्णन करें।
19. 'नैषधीयचरितम्' में महाकवि की रस-योजना का विवेचन करें।
20. 'नैषधीयचरितम्' के प्रथम सर्ग का सारांश लिखें।
21. पण्डितकवि के रूप में श्रीहर्ष की समालोचना करें।
22. 'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः' इस वचन की समालोचना करें।
23. 'नैषधं विद्वदौषधम्' इस उक्ति के आधार पर 'नैषधीयचरितम्' की समीक्षा करें।
24. 'बृहत्त्रयी' में नैषधीयचरितम् का स्थान निरूपित करें।
25. निम्न श्लोकों की व्याख्या करें:-

(क) विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः
संगीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्।
अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुङ्गमभ्रंलिहाग्राः
प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः॥

(ख) मत्तोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा
हंसश्रेणीरचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा
नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः॥

(ग) आनन्दोत्थं नयनसलिलं यत्र नान्यैर्निमित्तै-
र्नान्यस्तापः कुसुमशरजादिष्टसंयोगसाध्यात्।
नाप्यन्यस्मात् प्रणयकलहाद्विप्रयोगोपपत्ति-
र्वित्तेशानां न च खलु वयो यौवनादन्यदस्ति॥

(घ) मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भि-
र्मन्दाराणामनुतटरुहां छायया वारितोष्णाः ।
अन्वेष्टव्यैः कनकसिकतामुष्टिनिक्षेपगूढैः
संक्रीडन्ते मणिभिरमरप्रार्थिता यत्र कन्याः ॥

(ङ) मत्वा देवं धनपतिसखं यत्र साक्षाद्वसन्तं
प्रायश्चापं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम् ।
सभ्रूभङ्गप्रहितनयनैः कामिलक्ष्येष्वमोघै-
स्तस्यारम्भश्चतुरवनिताविभ्रमैरेव सिद्धः ॥

(च) तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयं
दूराल्लक्ष्यं सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन ।
यस्योपान्ते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे
हस्तप्राप्यस्तबकनमितो बालमन्दारवृक्षः ॥

(छ) तन्मध्ये च स्फटिकफलका काञ्चनी वासयष्टिः
मूले बद्धा मणिभिरनतिप्रौढवंशप्रकाशैः ।
तालैः शिञ्जावलयसुभगैर्नर्तितः कान्तया मे
यामध्यास्ते दिवसविगमे नीलकण्ठः सुहृद्वः ॥

(ज) तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः ।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः ॥

(झ) अयि जीवितनाथ जीवसीत्यभिधायोत्थितया तया पुरः ।
ददृशे पुरुषाकृति क्षितौ हरकोपानलभस्म केवलम् ॥

(ञ) उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्तव कान्तिमत्तया ।
तदिदं गतमीदृशीं दशां न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः ॥

(ट) कृतवानसि विप्रियं न मे प्रतिकूलं न च ते मया कृतम् ।
किमकारणमेव दर्शनं विलपन्त्यै रतये न दीयते ॥

(ठ) हृदये वससीति मत्प्रियं यदवोचस्तदवैमि कैतवम् ।
उपचारपदं न चेदिदं त्वमनङ्गः कथमक्षता रतिः ॥

(ड) रजनीतिमिरावगुण्ठिते पुरमार्गे घनशब्दविक्लवाः ।
वसतिं प्रिय ! कामिनां प्रियास्त्वदृते प्रापयितुं क ईश्वरः ॥

(ढ) अवगम्य कथीकृतं वपुः प्रियबन्धोस्तव निष्फलोदयः ।
बहुलेऽपि गते निशाकरस्तनुतां दुःखमनङ्ग ! मोक्ष्यति ॥

(ण) रचितं रतिपण्डित ! त्वया स्वयमङ्गेषु ममेदमार्तवम् ।
ध्रियते कुसुमप्रसाधनं तव तच्चारुवपुर्न दृश्यते ॥

(त) अयि सम्प्रति देहि दर्शनं स्मर ! पर्युत्सुक एष माधवः ।
दयितास्वनवस्थितं नृणां न खलु प्रेम चलं सुहृज्जने ॥

(थ) निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि ।
नलः सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः ॥

(द) रसैः कथा यस्य सुधावधीरिणी नलः स भूजानिरभूद्गुणाद्भुतः ।
सुवर्णदण्डैकसितातपत्रितज्वलत्प्रतापावलिकीर्तिमण्डलः ॥

(ध) अधीतिबोधाचरणप्रचारणैर्दशाश्चतस्रः प्रणयन्नुपाधिभिः ।
चतुर्दशत्वं कृतवान्कुतः स्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम् ॥

(न) अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी त्रयीव नीताङ्गगुणेन विस्तरम् ।
अगाहताष्टादशतां जिगीषया नवद्वयद्वीपपृथग्जयश्रियाम् ॥

(प) पदैश्चतुर्भिः सुकृते स्थिरीकृते कृतेऽमुना के न तपः प्रपेदिरे ।
भुवं यदेकाङ्घ्रिकनिष्ठया स्पृशन्दधावधर्मोऽपि कृशस्तपस्विताम् ॥

(फ) निवारितास्तेन महीतलेऽखिले निरीतिभावं गमितेऽतिवृष्टयः ।
न तत्यजुर्नूनमनन्यसंश्रयाः प्रतीपभूपालमृगीदृशां दृशः ॥

(ब) प्रतीपभूपैरिव किं ततो भिया विरुद्धधर्मैरपि भेत्तृतोज्झिता ।
अमित्रजिन्मित्रजिदोजसा स यद्विचारदृक्चारदृगप्यवर्तत ॥

(भ) अयं दरिद्रो भवितेति वैधसीं लिपिं ललाटेऽर्थिजनस्य जाग्रतीम् ।
मृषा न चक्रेऽल्पितकल्पपादपः प्रणीय दारिद्र्यदरिद्रतां नृपः ॥

Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur
Directorate of Distance Education
P.G. 2nd Semester Examination 2016 (Session 2015-17)
Subject:- Sanskrit
Paper – 6th
Model Paper (Full Marks – 70)

Answer any four questions:-

किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें।

उत्तररामचरितम्

1. उत्तररामचरितम् में भवभूति के नाट्य वैशिष्टय का वर्णन करें।
2. भवभूति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन करें।
3. उत्तररामचरितम् के आधार पर राम का चरित्र चित्रण करें।
4. 'एको इसः करूण एव' इस उक्ति के आधार पर उत्तररामचरितम् की समीक्षा करें।
5. 'उत्तरेरामचरिते भवभूतिर्विशिष्टयते' इस उक्ति की समाचोलना करें।
6. उत्तररामचरितम् के अनुसार सीता का चरित्र चित्रण करें।
7. 'कारूण्यं भवभूतिरवे तनुते' इस उक्ति की समाचोलना करें।
8. उत्तररामचरितम् के प्रथम अंग का सारांश प्रस्तुत करें।

वेणीसंहारम्

9. वेणीसंहार नाटक के प्रथम अंग की कथावस्तु का वर्णन करें।
10. वेणीसंहार के आधार पर भीम का चरित्र चित्रण करें।
11. वेणीसंहार नाटक के नामकरण की सार्थकता का विवेचन करें।
12. वेणीसंहार के अनुसार द्रौपदी का चरित्र चित्रण करें।
13. वेणीसंहार नाटक के द्वितीय अंक का सारांश प्रस्तुत करें।
14. नाटककार भट्टनारायण के नाट्यवैशिष्ट्य का वर्णन करें।
15. वेणीसंहार नाटक के तृतीय अंक की कथावस्तु का वर्णन करें।
16. भट्टनारायण के काल एवं कृतित्व का विवेचन करें।

प्रसन्नराघवम्

17. नाटककार के रूप में जयदेव के नाट्यवैशिष्ट्य का विवेचन करें।
18. प्रसन्नराघव नाटक के प्रथम अंक की कथावस्तु का वर्णन करें।
19. प्रसन्नराघव नाटक की नाटकीय विशेषता का उल्लेख करें।
20. नाटक के प्रथम अंक का सारांश प्रस्तुत करें।
21. जयदेव के काल एवं कृतित्व का विवेचन करें।
22. जयदेव की नाट्यकला के वैशिष्ट्य का आकलन करें।
23. प्रसन्न राघव नाटक की इस योजना की समालोचना करें।
24. निम्न श्लोकों की व्याख्या करें:–

(क) सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्वचनीयता।
यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः।।

(ख) देव्य अवि हि वैदेह्याः सापवादो यतो जनः।
रक्षोगृहस्थितिर्मूलमग्निशुडौ त्वनिश्चयः।।

(ग) विश्वम्भरा भगवती भवतीमसूत
राजा प्रजापतिसमो जनकः पिता ते।
तेषां वधूस्त्वमसि नन्दिनि। पार्थिवानां।
येषां कुलेषु सविता च गुरुर्वयं च।।

(घ) यौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्त्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां कथमर्थोऽनुधावति।।

(ङ) स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।

(च) उत्पत्ति परिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः।
तर्थोदकं च वघ्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।।

(छ) दिष्टया सोडयं महावाहरञ्जनानन्दवर्धनः।
यस्य वीर्येण कृतिनो वयं च भुवनानि च।।

(ज) वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव जडे
न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा।
भवति हि पुनर्भूयान् भेदः फलं प्रति तद्यथा
प्रभवति शुचिर्बिम्वग्राहे मणिर्न मृदादयः।।

(झ) कुसुमाञ्जलिरपर इव प्रकीर्यते काव्यबन्ध एषोऽत्र।
मधुलिह इव मधुबिन्दून्विरलानपि भजत गुणलेशान।।

(ञ) तथाभूतां हष्ट्वा नृपसदसि पाञ्चालतनयां
वने व्याधैः सार्धं सुचिरमुषितं वल्कलधरैः।
विराटस्यावासे स्थितमनुचितारम्भनिमृतं
गुरुः खेदं खिन्ने मयि भणति नाद्यापि कुरूष।

(ट) यद्वैद्युतमिव ज्योतिरार्ये क्रुद्देऽद्य संभृतम।
तत्प्रावृडिव कृष्णेयं नूनं संवर्धयिष्यति।।

(ठ) जीवत्सु पाण्डुपुन्नेषु दूरमप्रोषितेषु च।
पाञ्चालराजतनया वहते यदिमां दशाम्।।

(ड) स्पीणां हि साह चर्याद् भवन्ति चेतांसि भर्तृसहशानि।
मधुरापि हि मूच्छर्यते विषविटपिसमाश्रिता वल्ली।।

(ढ़) हुते जइति गार्गेये पुरस्कृत्य शिखण्डिलम्।
या श्लाघा पाण्डुपत्राणां सेवास्माकं भविष्यति।।

(ण) इसमस्मऽपाश्रयैकचित्ता मनसा प्रेमनिवद्धमत्सरेण।
नियत कुपितातिबल्लभत्वा त्सवयमुत्प्रेक्ष्य ममापराध लेशम्।।

(त) आकरेणैव चतुरास्तर्मयन्ति परेड़िगतम्।
गर्भष्यं केतकीपुष्- मामोदेनेव षट्पदाः।।

(थ) गुणग्रामा विसेवादि नामापि हि महात्मनाम्।
यथा सुवर्णश्रीखण्डरत्नाक सुधाकराः।।

(द) चन्द्रेच रामचन्द्रे च नारीणां हगञ्चले।
नीलोत्पल सुहत्कान्तौ कस्य नाऽमोदते मनः।।

(ध) न ब्रह्मविद्या न च राजलक्ष्मी
स्तथा यथेयं कविता कवीनाम्।
लोकोत्तरे पुंसि निवेश्यमाना
पुत्रीव हर्ष हृदये करोति।।

(न) अस्ति में कार्मकं दिव्यं न्यस्तं जनकभूमुजि।
चस्य ताणानले तिस्त्रः पुरः प्राप्ताः पतड़गताम्।।

(प) मकरन्द रसस्यनन्द सुन्दरोद्गार धारिणौ।
श्रवणानन्दितावेतौ वन्दिनाविव राणतः।।

(फ) अये लंकेश विस्मरत्त शेखरालोकनेनते।
समयो याति तत्तूर्ण गृहाण हरकार्यक्रम्।।

Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur
Directorate of Distance Education
P.G. 2nd Semester Examination 2016 (Session 2015-17)
Subject:- Sanskrit
Paper – 7th
Model Paper (Full Marks – 70)

Answer any four questions:-
किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें।

1. भारतीय कला का परिचय दें।
2. वास्तुशास्त्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।
3. भारतीय संस्कृतशास्त्र का परिचय देते हुए संगीत के इतिहास का वर्णन करें।
4. भारतीय ललितकला का परिचय दें तथा उसकी विशेषताओं का वर्णन करें।
5. भारतीय कला के वैशिष्ट्य का वर्णन करें।
6. वेदों के रचनाकाल का वर्णन करें।
7. ऋग्वेद के प्रतिपाद्य विषय का वर्णन करें।
8. यजुर्वेद के वर्ण्य विषय पर प्रकाश डालें।
9. समवेद के वर्ण्य विषय एवं महत्व पर प्रकाश डालें।
10. वेदांग साहित्य का परिचय दें।
11. ब्राह्मण साहित्य के प्रतिपाद्य की विवेचना करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए।
12. ब्राह्मण साहित्य का काल निर्धारण कीजिए।
13. पुराण साहित्य की परिभाषा देते हुए प्रसिद्ध पुराणों का परिचय दीजिए।
14. संस्कृत साहित्य में पुराणों के महत्त्व पर प्रकाश डालें।
15. पुराण का परिचय देते हुए उसके वर्गीकरण पर प्रकाश डालें।
16. नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति के सिद्धान्तों की विवेचना करें।
17. खपक साहित्य के उत्पत्ति एवं विकास का वर्णन करें।
18. गद्य साहित्य के उत्पत्ति एवं विकास का वर्णन करें।
19. संस्कृत के प्रमुख गद्यकारों का परिचय दें।
20. रामायण के वाय विषय का वर्णन करें।
21. रामायण का काल निर्धारण करें।
22. रचनाकाल की दृष्टि से रामायण एवं महाभारत की तुलना करें।
23. रामायण एवं महाभारत के पौर्वापर्य का वर्णन करें।
24. महाकाव्यों के उद्भव एवं विकास का वर्णन करें।
25. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखें:–

(क)	शतपथ ब्राह्मण	(ख)	गोपथ ब्राह्मण	(झ)	शिक्षाशास्त्र	(ञ)	अथर्ववेद
(ग)	संगीतशास्त्र	(घ)	भारतीय शिल्पकला	(ट)	वायुपुराण	(ठ)	कल्पसूत्र
(ड़)	सामवेद	(च)	वृहदारण्यकोपनिषद्	(ड)	प्रातिशारथ	(ढ़)	मूर्च्छना
(छ)	निरुक्त	(ज)	यस्क	(ण)	कर्पूर मञ्जरी	(त)	जयदेव
				(थ)	विशाखदत्त	(द)	भारवि

Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur
Directorate of Distance Education
P.G. 2nd Semester Examination 2016 (Session 2015-17)
Subject:- Sanskrit
Paper – 8th
Model Paper (Full Marks – 70)

Answer any four questions:-
किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें।

लेख लिखेंः–

1. काव्य स्वरूपम्
2. उपमा कालिदासस्य
3. दण्डीनः पदलालित्यम्
4. सन्दर्मेषु दशरूपकं श्रेयः
5. काव्येषु नाटकं रभ्यम्
6. रीतिरात्मा काव्यस्य
7. माधे सन्ति त्रयों गुणाः
8. नैषध विद्वदौषधम्
9. वणोच्छिष्टं जगटसर्वभ्
10. रम्या रामायणी कथा
11. भारवेः अर्थभौरवम्
12. संस्कृतस्य समस्या
13. संस्कृतस्य महत्वम्
14. संस्कृतं राष्ट्रभाषा स्यात्
15. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि जरीयसी
16. छात्र जीवने अनुशासमन्
17. विद्वान् सर्वत्र पूज्यते
18. सदाचारः
19. संस्कृत साहित्ये लोकमंगल भावना
20. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः
21. उद्यमेनहि सिद्धन्ति कार्याणि न मनोरथैः
22. आतड़कवादस्य समस्या